बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

स्नातक तृतीय खण्ड
हिन्दी प्रतिष्ठा, पत्र - VII

दिनांक : 27.7.2020

□ डॉ. उमेश कुमार.

टेलीविजन पटकथा लेखन के मौलिक तत्व

टेलीविजन में पटकथा लेखन का विशेष महत्व है। पटकथा लेखन का आशय 'धारावाहिक' से है। धारावाहिक के दर्शकों की संख्या काफी होती है। लोग इस कार्यक्रम से हमेशा जुड़े रहते हैं। दूरदर्शन द्वारा प्रायः सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक धारावाही का प्रसारण होता रहा है। रामायण, महाभारत जैसे धारावाहिक देखने वालों की संख्या करोड़ों में है। कुछ हास्य-व्यंग्य धारावाहिक को दर्शकों ने काफी पसंद किया है। मुंगेरी लाल के हसीन सपने, भाभी जी घर पर हैं, तारक मेहता का उल्टा चश्मा, आदि प्रमुख हैं। सैकड़ों सामाजिक और ऐतिहासिक धारावाहिक तो आते ही रहते हैं।

टेलीविजन धारावाहिक के मौलिक तत्व निम्नलिखित हैं -

(i) आइडिया :- किसी भी धारावाहिक को बनाने से पूर्व एक निश्चित आइडिया और विषय का होना आवश्यक है। इसमें लेखक वर्त्तमान समस्याओं को ध्यान में रखकर ही कोई विषय तय करता है।

(ii) विषयवस्तु :- धारावाहिक का विषय कुछ भी हो सकता है। यथा सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक अथवा सांस्कृतिक इत्यादि। दर्शक की रूचि के अनुसार ही धारावाहिक होना चाहिए।

(iii) कान्सेप्ट नोट :- विषय और विषय तय कर लेने के बाद लेखक एक छोटी-सी कथा का स्वरूप देकर संभावनाओं पर विचार करता है। इसे ही कान्सेप्ट नोट कहा जाता है। इस नोट में 13 कड़ियों से लेकर 504 कड़ियाँ हो सकती है।

(iv) कथा-सार :- इसके अन्तर्गत 'वन लाइन स्टोरी' को तीन भागों रखा जाता है - आदि, मध्य एवं अंत अथवा क्लाइमेक्स। कथा-सार की तीन प्रमुख बातें होती है - कहानी, आलेख एवं संवाद।

(v) स्थान एवं चरित्र चित्रण :- धारावाहिक में स्थान, चरित्र व कैमरों का मूवमेंट निश्चित होता है। पात्र को बड़ी सावधानी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

(vi) ट्रीटमेन्ट :- दृश्यानुरूप कथा-प्रस्तुति को ट्रीटमेन्ट कहा जाता है। सामान्यतः धारावाहिक चाहे किसी भी देश या भाषा का हो, दृश्य नहीं बदलते पात्रों का आना-जाना चलता रहता है, लेकिन कैमरा एक ही स्थान पर टिका रहता है।

— उमेश कुमार